ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -18 | अंक - 6 | जून- II, 2017 | पाक्षिक | माउण्ट आबू | रु. 8.00

शिक्षा में मूल्य एवं आध्यात्मिकता का हो समावेश

* शिक्षाविदों के लिए त्रिदिवसीय सम्मेलन का सफल आयोजन

* आध्यात्मिकता खोलती है हृदय के द्वार

ज्ञानसरोवर। आज विश्व समस्याओं के उद्वेग से घिरा है। अब के समय में हमें यह समझने की आवश्यकता है कि परिस्थितियाँ सामान्य रूप से यथावत चलने वाली नहीं हैं। उक्त विचार प्रो. एम.जगदीश कुमार, वाइस चांसलर, जे.एन.यू. नई दिल्ली ने शिक्षा प्रभाग द्वारा युनिवर्सिटी तथा कॉलेज के शिक्षाविदों के लिए 'वैल्यु एज्युकेशन एंड स्पीरिच्युलिटी' विषय पर आयोजित कॉन्फ्रेन्स में व्यक्त किये।

उन्होंने कहा कि यदि हम एक टिकाऊ एवं समावेशी समाज चाहते हैं तो हमें मूल्य एवं आध्यात्मिकता के महत्व को समझना और अपने जीवन में उसे अपनाना ही होगा।

ब्रह्माकुमारीज़ की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी ने कहा कि ईश्वर ने हमें जीवन जीने की कला सिखाई तथा दूसरों के लिए सदैव अच्छा करने की प्रेरणा दी है। सादगी, सफाई तथा सच्चाई आदि मूल्यों ने मेरे जीवन में चमत्कार जैसा काम किया है। जीवन रहते हमारे अंदर कोई कमी व कमज़ोरी न रह जाये, उसे निकाल के ही दम लें।

सम्मेलन में सम्बोधित करते हुए राजयोगिनी दादी जानकी। साथ हैं राजयोगी ब्र.कु. निर्वैर, प्रो. एम. जगदीश कुमार, ब्र.कु. शुक्ला दीदी व अन्य।

राजयोगी ब्र.कु. निर्वैर,सेक्रेट्री जेनरल एवं चेयरपर्सन,शिक्षा प्रभाग ने कहा कि दूसरे विश्वविद्यालय मनुष्य को शिक्षक, चिकित्सक, इंजीनियर बनाते हैं, परंतु ब्रह्माकुमारी विश्वविद्यालय मनुष्य को मूल्य शिक्षा, आध्यात्मिकता एवं राजयोग द्वारा मानव से देवता बना रहा है। उन्होंने कहा कि भगवान ने मनुष्य को अपनी छवि के अनुरूप ही बनाया है। उन्होंने सभी शिक्षाविदों से आग्रह एवं निवेदित भाव से कहा कि आध्यात्मिकता को शिक्षा में सम्मिलित कर पीढ़ियों को नवजीवन प्रदान करें।

ब्र.कु. मृत्युंजय,उपाध्यक्ष,शिक्षा प्रभाग ने कहा कि आज के समय में 'ज्ञान शक्ति है' इसका अर्थ मानव निर्माण की जगह धन निर्माण की शक्ति ने ले लिया है। ब्रह्माकुमारीज़ भारत को दैवी भारत बनाने की प्रक्रिया में अग्रसर है। आज हमने सौर्य शक्ति का निर्माण तो कर लिया, परंतु आत्मिक शक्ति को भूल गए हैं। आज समय की मांग है कि पुन: आध्यात्मिक शिक्षा को अपनाया जाये।

- आध्यात्मिकता के समावेश बिना आज की शिक्षा अधूरी
- शिक्षा में आध्यात्मिकता का समावेश होना ही चाहिए
- सादगी, सच्चाई, सफाई से जीवन में होता चमत्कार
- भगवान से मनुष्य को अपनी छवि के अनुरूप ही बनाया

प्रो. एस.के. कोरी, एग्ज़ीक्यूटिव डायरेक्टर कम मेम्बर सेक्रेट्री,कर्नाटक स्टेट हाइयर एज्युकेशन काउंसिल बैंगलूरु ने ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा मानव के आध्यात्मिक उन्नति के लिए 'मूल्य एवं आध्यात्मिक शिक्षा कोर्स' चलाए जाने की सराहना करते हुए कहा कि अब तक अन्य विश्वविद्यालय एवं नीतियाँ ऐसा करने में असमर्थ रही हैं। उन्होंने कहा कि शिक्षा बुद्धि के द्वार खोलती है, परंतु आध्यात्मिकता हृदय के द्वार खोलती है। ब्र.कु. शुक्ला बहन, डायरेक्टर, ओ.आर.सी. गुरुग्राम ने कहा कि मूल्य एवं आध्यात्मिक शिक्षा मानव की आत्मिक शक्ति को जागृत कर एक संतुलित जीवन जीने में मदद करेगा। डॉ. मनप्रीत सिंह मान, डायरेक्टर, ए.आई.सी.टी.ई. नई दिल्ली ने कहा कि आज के समय में प्रमुख कमी मानसिक कमज़ोरी है। हमें उस दिशा में कार्य करने की आवश्यकता है।

प्रो. वेद प्रकाश,पूर्व चेयरमैन,यू.जी.सी. नई दिल्ली ने कहा कि मूल्यों को पहचानते हुए उन्हें सर्वप्रथम स्वयं में धारण करना चाहिए तथा विद्यार्थियों के जीवन में भी इसकी धारणा करवानी चाहिए।

डॉ. ब्र.कु. हरीश शुक्ला,राष्ट्रीय संयोजक,शिक्षा प्रभाग ने सभी मेहमानों एवं वक्ताओं का स्वागत किया तथा ब्र.कु. डॉ. पाण्ड्यामणि,अध्यक्ष,मूल्य शिक्षा कार्यक्रम ने आध्यात्मिक शिक्षा के कोर्स के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी दी।

स्वस्थ मन के लिए श्रेष्ठ संकल्पों का करें चयन - शिवानी

देहरादून-सुभाष नगर। आज हमारे जीवन की सबसे बड़ी समस्या यह है कि हम पुरानी बातों या पुरानी मान्यताओं के आधार से सबकुछ तय करते हैं और उससे ही हमें कभी खुशी तो कभी दु:ख होता है। जितना मन बाहरी चीज़ों पर निर्भर होगा उतना कमज़ोर होगा, लेकिन मन यदि आन्तरिक शक्ति पर निर्भर है तो शक्तिशाली होगा। उक्त विचार अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त जीवन प्रबन्धन विशेषज्ञा राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी शिवानी ने 'सम्बन्धों में मधुरता' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि सबका व्यवहार मेरे अनुसार होना सम्भव नहीं है। अगर मैं खुश हूँ, तो दूसरों के कारण, या दु:खी हूँ तो भी दूसरों के ही कारण, तो मैंने अपना रिमोट कन्ट्रोल दूसरों के हाथ में दे दिया है यानि मेरे मन की स्थिति मेरे कन्ट्रोल में नहीं है।

कार्यक्रम के दौरान मंचासीन हैं जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा ब्र.कु. शिवानी, पूर्व स्पोर्ट्स मिनिस्टर दिनेश अग्रवाल, पार्लियामेंट अफेयर मिनिस्टर प्रकाश पन्त तथा ब्र.कु. मंजू।

उन्होंने कहा कि हम सभी ने अपने अन्दर प्रोग्रामिंग कर रखी है कि ऐसी वाली सिचुएशन आएगी तो मैं गुस्सा करूंगी, ऐसा व्यक्ति होगा तो गुस्सा नहीं करूंगी, वैसा होगा तो कुछ और। लेकिन चेक करो कि गुस्सा करते समय आपकी एनर्जी का लेवल लो है या हाई है? आप कैसा फील कर रहे होंगे? आपका व्यवहार, आपके वायब्रेशन्स, आपका स्वास्थ्य, आपके सम्बन्ध सब कैसे होंगे? तो हर तरह से घाटा ही घाटा हुआ। मन के पास बहुत सारे विकल्प हैं - चुप रहना, शांति से जवाब देना, खुश रहना, गुस्सा करना, रो देना। मुझे हेल्दी रहना है, इसलिए हेल्दी च्वाइस यूज़ करना शुरू करें।

उन्होंने आगे कहा कि मन को समझाना है कि लोग हमारे अनुसार नहीं चलने वाले हैं, इसलिए नया लाइफ स्टाइल चूज़ करके चलना है, मुझे गुस्सा नहीं करना है। गुस्सा सेहत, खुशी, रिश्तों के लिए हानिकारक है। इस दौरान उन्होंने सभी को राजयोग मेडिटेशन द्वारा गहन शांति की अनुभूति भी कराई।

कार्यक्रम में देहरादून तथा अन्य स्थानों से हजार से अधिक संख्या में लोगों ने भाग लिया। कार्यक्रम के आरंभ में ब्र.कु. शिवानी तथा माननीय पूर्व स्पोर्ट्स मिनिस्टर दिनेश अग्रवाल तथा पार्लियामेन्ट अफेयर मिनिस्टर प्रकाश पन्त का गुलदस्ता भेंटकर व बैज पहनाकर स्वागत किया गया। शहर के अनेक गणमान्य लोगों ने उपस्थित रहकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।